उषा प्रियंवदा का जीवन, व्यक्तित्व एवं कृतित्व

रूबी शर्मा (हिंदी), शोधकर्ता, सनराइज़ विश्वविद्यालय, अलवर (राजस्थान)
डॉ. कृष्णा चतुर्वेदी (हिंदी), प्रोफेसर (हिंदी विभाग), सनराइज़ विश्वविद्यालय, अलवर (राजस्थान)

सार

उषा प्रियंवदा एक प्रख्यात भारतीय लेखिका, अनुवादक और शिक्षाविद हैं जिन्हें हिंदी साहित्य में उनके योगदान के लिए जाना जाता है। भारत में जन्मी, उन्होंने अपनी शिक्षा संयुक्त राज्य अमेरिका में पूरी की और कई विश्वविद्यालयों में दक्षिण एशियाई अध्ययन के प्रोफेसर के रूप में काम किया। प्रियंवदा की साहित्यिक रचनाएँ मुख्य रूप से भारतीय महिलाओं के अनुभवों, लिंग, कामुकता और सामाजिक अपेक्षाओं जैसे विषयों की खोज पर केंद्रित हैं। उनका उपन्यास "पुरुषार्थ" एक ऐतिहासिक कृति है जिसने पितृसत्तात्मक समाज में आत्म-पहचान और स्वायत्तता के लिए एक युवा महिला के संघर्ष के सूक्ष्म चित्रण के लिए आलोचनात्मक प्रशंसा प्राप्त की है। प्रियंवदा को अंग्रेजी रचनाओं के हिंदी में अनुवाद के लिए भी जाना जाता है, जिसने साहित्यिक परिदृश्य को समृद्ध किया है और अंतर-सांस्कृतिक समझ को सुविधाजनक बनाया है। उनके काम को उसकी प्रामाणिकता, गहराई और संवेदनशीलता के लिए मनाया जाता है, जिससे वह भारतीय साहित्य और महिला अध्ययन के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण हस्ती बन गईं।

विशेष शब्द : ***पुरुषार्थ , अंतर-सांस्कृतिक , अंतर-सांस्कृतिक, भारतीय साहित्य***

परिचय

उषा प्रियंवदा :-

उषा प्रियंवदा हिंदी उपन्यास आकाश के चमकते सितारों में से एक हैं। हिंदी में अनगिनत प्रौढ़ और प्रशंसनीय महिला लेखिकाएं नहीं हैं फिर भी ऐसी लेखिकाओं की कोई कमी नहीं है। हिंदी उपन्यास साहित्य प्रियंवदा जैसी रचनात्मक लेखिकाओं से पुष्पित-पल्लवित होता रहा है, जिनके लेखन में नारी का प्रेम, दया और त्याग झलकता है। प्रियंवदजी, एक सशक्त उपन्यासकार और प्रसिद्ध कहानीकार के रूप में पाठकों को प्रभावित करती हैं। उनका लेखन व्यापक दायरे वाला, मौलिक और साहित्यिक मूल्यों से समृद्ध है। बीसवीं सदी के छठे दशक में वह एक उपन्यासकार और कहानीकार के रूप में प्रसिद्ध थीं।

उषा प्रियंवदा

उषा प्रियंवदा द्वारा आधुनिक समाज में नारी जीवन के सम्पूर्ण मानसिक दुःख-दर्द की कल्पना करने का प्रयास काफी सराहनीय है। उन्होंने नारी की मानसिक पीड़ा और कमियों को मूर्त रूप देकर हमारे वर्तमान समाज की एक महत्वपूर्ण समस्या को अभिव्यक्त किया। उनकी सभी रचनाएँ स्त्री-पुरुष के संबंधों तथा उनके मानसिक संघर्ष एवं संकट से संबंधित हैं। एक महिला होने के नाते वह नारी मानसिकता की गहराई तक जाकर नारी और भारतीय संस्कारों में मौजूद सूक्ष्म विवादों का सफलतापूर्वक चित्रण कर सकीं। उषा प्रियंवदा (हिन्दी: उषा प्रियंवदा) उषा निल्सन (नी उषा सक्सेना; 1930, कानपुर -) का उपनाम है, जो विस्कॉन्सिन विश्वविद्यालय, मैडिसन में दक्षिण एशियाई अध्ययन की एक भारतीय मूल की अमेरिकी एमेरिटा प्रोफेसर, एक उपन्यासकार हैं। और हिंदी में लघु-कथा लेखक और हिंदी से अंग्रेजी में अनुवादक। वह 1976 में प्रेमचंद पुरस्कार और 2009 में पद्मभूषण मोटूरि सत्यनारायण पुरस्कार की विजेता थीं।

उषा सक्सेना का जन्म कानपुर में एक गरीब परिवार में हुआ था जो भारत के स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय था। वह अपनी मां प्रियंवदा द्वारा पाली गई तीन बेटियों में सबसे छोटी थीं, जिन्हें विधवा होने के कारण सामाजिक पूर्वाग्रह का सामना करना पड़ा था। सक्सेना ने इलाहाबाद

विश्वविद्यालय में अंग्रेजी साहित्य पढ़ा और अपनी स्नातक, स्नातकोत्तर और डॉक्टरेट की डिग्री प्राप्त की।1961 में, उन्होंने इंडियाना विश्वविद्यालय, ब्लूमिंगटन में पोस्ट-डॉक्टरल अध्ययन के लिए फुलब्राइट छात्रवृत्ति प्राप्त की। वहां उनकी मुलाकात किम निल्सन से हुई, जो उनके पति बने। 1977 तक, निल्सन्स अलग हो गए, और 1981 में, उन्होंने हार्वर्ड विश्वविद्यालय के प्रोफेसर पेर निक्रोग से शादी कर ली। न्यक्रोग की 2014 में मृत्यु हो गई।

"उनके उपन्यासों में अविश्वास, आतंक और भय के मनोविकार को देखते हुए यह माना जा सकता है कि वह अस्तित्ववादी दर्शन से प्रभावित थीं"।

साठ के दशक के बाद उन्होंने उपन्यास में एक नई जागरूकता लाई और महिला लेखिकाओं के बीच अपने लिए जगह बनाई।

इलाहाबाद विश्वविद्यालय से अंग्रेजी साहित्य। उन्होंने उसी विश्वविद्यालय से पीएचडी की डिग्री प्राप्त की। लेडी श्रीराम कॉलेज, दिल्ली और इलाहाबाद विश्वविद्यालय में सेवाएं देने के बाद, वह पोस्ट डॉक्टरेट अध्ययन के लिए ब्लेमिंगटन इंडियन यूनिवर्सिटी में फुलब्राइट स्कॉलर के रूप में शामिल हुईं। बाद में मैडिसन के विस्कासिन विश्वविद्यालय में दक्षिण एशियाई विभाग में प्रोफेसर के रूप में शामिल हुए। 2002 में, वह अपनी सेवाओं से सेवानिवृत्त हो गईं और तब से पढ़ाई और लेखन में व्यस्त हैं।

जीवन के दर्शन:-

आज़ादी के बाद हिंदी साहित्य में महिला उपन्यासकारों का जुड़ना एक उल्लेखनीय घटना है। आधुनिक महिला उपन्यासकार ने समसामयिक सामाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक जीवन मूल्यों की पृष्ठभूमि तथा बदलते जीवन मूल्यों में व्यक्तिगत जीवन में संघर्ष की स्थिति का चित्रण करना प्रारंभ किया। उन्होंने जीवन के आधुनिक मूल्यों की स्थापना की जहां उन्होंने पारंपरिक रीति-रिवाजों को खारिज कर दिया।

स्वतंत्रता के बाद महिला उपन्यासकारों में उषा प्रियंवदा का नाम सीमित होने के बावजूद उनके लेखन के उच्च साहित्यिक मूल्यों के कारण उल्लेखनीय है। उषा प्रियंवदा काफी उदार हैं हालांकि उनका नजरिया आधुनिक है। पश्चिमी साहित्य के अध्ययन और उससे निकटता के कारण उनके उपन्यासों में लगभग सभी पात्र महिलाएँ हैं, उनके महिला पात्र काफी स्वतंत्र और निर्भीक हैं। स्वतंत्रता के बाद के समय की घरेलू, सामाजिक, राजनीतिक और धार्मिक परिस्थितियों के अनुरूप जीवन को ढालने की प्रवृत्ति दिखाई दी और साथ ही भारतीय महिला के जीवन में होने वाले बदलावों की स्पष्ट तस्वीर भी सामने आने लगी। सामाजिक, मनोवैज्ञानिक और आर्थिक परिवर्तन और संघर्ष की परिस्थितियाँ।

उषाजी एक लेखिका हैं जो खुद को पुरुष समकक्षों से दूर रखती हैं। उनके उपन्यासों के केंद्र में चाहे वह पचपन खम्भे लाल दीवारें की सुषमा हो या वह रुकोगी नहीं की राधिका हो या वह शेष यात्रा की अनु हो या अंतर्वंषी की वाना हो, नारी की वेदना है, स्वयं के बारे में सतर्कता, आर्थिक निर्भरता, व्यक्तिगत स्वतंत्रता और उनके विचार और दृष्टिकोण में परिवर्तन।

उषा के लेखन में साक्षरता विशिष्टता

प्रियंवदा:-

प्रियंवदजी के उपन्यासों में शहरी परिवारों की गहरी भावनात्मक संवेदनाओं का चित्र मिलता है। उन्होंने आधुनिक जीवन के एकांत, ऊब, आतंकवाद, अधीरता, स्वतंत्र सोच और परंपराओं और रीति-रिवाजों के खिलाफ विद्रोह को चित्रित करके वास्तविकता को समझने की अपनी क्षमता दिखाई है। आधुनिक युग की हकीकत यह है कि जहां भौतिक सुख-सुविधाएं बढ़ रही हैं वहीं मानसिक खुशी कम होती जा रही है। आधुनिक युग की निराशा, ऊब, अकेलापन और घुटन उपन्यासकार उषा प्रियंवदा की रचनाओं में भावनात्मक शैली में उजागर हुई है। 1961 में संयुक्त राज्य अमेरिका जाने से पहले उषा सक्सेना ने लेडी श्रीराम कॉलेज, नई दिल्ली में पढ़ाया था। वह इलाहाबाद विश्वविद्यालय में सहायक प्रोफेसर भी थीं। 1964 में, उषा सकसेना निल्सन दक्षिण एशियाई अध्ययन विभाग में भारतीय साहित्य और हिंदी भाषा पढ़ाने के लिए विस्कॉन्सिन विश्वविद्यालय, मैडिसन में शामिल हुईं। 1968 में उन्हें कार्यकाल प्रदान किया गया और 1977

में वे पूर्ण प्रोफेसर बन गईं। संयुक्त राज्य अमेरिका के शिक्षा विभाग के आदेश पर निल्सन ने हिंदी के लिए कई उन्नत पाठ्यपुस्तकें तैयार कीं, जिनका उपयोग देश भर के विभिन्न विश्वविद्यालयों में किया गया। अनुबंध से हिंदी साहित्य की दो पुस्तकें और लघु कथाओं का एक संग्रह निकला। जब निल्सन ने उपन्यास और लघु कथाएँ लिखना शुरू किया तो उन्होंने अपनी माँ का नाम प्रियंवदा को अपने उपनाम में शामिल कर लिया। उनके पहले उपन्यास, पचपन खंबे लाल दीवारें, पर बीबीसी द्वारा फिल्म बनाई गई, और बाद में एक भारतीय टेलीविजन श्रृंखला बनाई गई। शीर्षक लेडी श्रीराम कॉलेज की इमारतों का संदर्भ था। उनकी कहानियाँ महिलाओं के जीवन की जटिलताओं को संबोधित करती हैं, विशेषकर उन महिलाओं के जीवन की जिनसे पारंपरिक समाज निश्चल सेवा और आज्ञाकारिता की अपेक्षा करता है। उनके शुरुआती कार्यों में, उनके पात्र मुक्ति चाहते हैं और अक्सर एजेंसी प्राप्त करने में सफल होते हैं। कुछ केवल अपने अवसरों को बर्बाद करने के लिए भाग जाते हैं, कुछ असहाय जीवनसाथी के प्रति स्वार्थी व्यवहार करते हैं (मान और हाथ (1953)), कुछ अकेले पड़ जाते हैं (छुट्टी का दिन (हॉलिडे, 1969)), दूसरों को थोड़ी सी खुशी मिलती है (फिर वसंत आया (वसंत) रिटर्न्स, 1961)), लेकिन सभी किसी न किसी तरह खुद को संभालते हैं और जीवन के साथ आगे बढ़ते हैं।[3] अपने अमेरिकी प्रवास के दौरान निल्सन के कार्यों ने आप्रवासी महिलाओं की दोहरी दुनिया को प्रतिबिंबित किया: नई दुनिया में उन्हें पसंद की अधिक स्वतंत्रता हो सकती है, लेकिन फिर भी वे खुद को बाहरी लोगों के रूप में अलग-थलग पाती हैं और घर पर परिवार के लिए घर की याद दिलाती हैं।

जनवरी 1989 से, निल्सन ने बीबीसी की लेटर्स फ्रॉम अमेरिका श्रृंखला के हिस्से के रूप में विस्कॉन्सिन में जीवन पर साप्ताहिक बुलेटिन प्रसारित करना शुरू किया। ये लोकप्रिय साबित हुए और हर सप्ताह लाखों श्रोताओं को आकर्षित किया। 1976 में, निल्सन को उनकी लघु कहानियों के संग्रह के लिए उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा प्रेमचंद पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। उनके जीवन भर के काम के लिए, उन्हें 2009 में भारत सरकार से पद्मभूषण मोटुरी सत्यनारायण पुरस्कार मिला।

प्रकाशित रचनाएँ

उपन्यास:- पचपन खंभे लाल दीवारें (1964), रुकोगी नहीं राधिका (1984), शेष यात्रा (1984), अंतर्वंशी (2000) और भया कबीर उदास (2007) , डेज़ी रॉकवेल द्वारा अनुवादित, टाइगर बोल रहा हूँ 2021, रुकोगी नहीं राधिका [तुम नहीं रुकोगी, राधिका] (हिंदी में) 1967, अल्पविराम [अल्पविराम] (हिंदी में) 2019 |

लघुकथा संग्रह:- जिन्देगी और गुलाब के फूल, कितना बड़ा जुठ, एक कोई दूसरा, मेरी प्रिया कहानियां, संपूर्ण कहानियां, और शून्य अबन अन्य रचनाये

हिंदी कहानियों का अंग्रेजी में अनुवाद:- हिंदी कहानियां (अंग्रेजी अनुवाद) मीरा बाई, सूरदास (अंग्रेजी में)।

उषा प्रियंवदा के उपन्यासों का संक्षिप्त परिचय:-

उषाजी ने अपने सभी पांच उपन्यासों में स्त्री को केन्द्र में रखकर स्त्री की समस्याओं को समाज के सामने प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

उनके पहले उपन्यास "पचपन खम्भे लाल दीवारें" में एक ऐसी महिला की मार्मिक कहानी है, जिसकी घरेलू

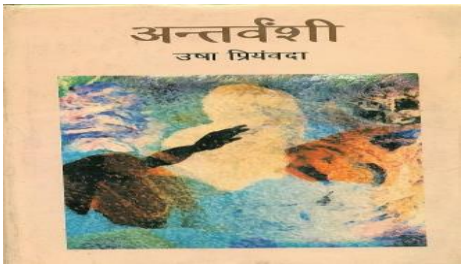

अंतर्वंशी : उषा प्रियंवदा

और आर्थिक कारणों से शादी नहीं हो पाई और सुषमा एक महिला के रूप में जीवन की सभी समस्याओं का साहस के साथ सामना करती है। किसी भी स्थिति में वह कमजोर नहीं पाई जाती। इसी तरह रोकोगी नहीं राधिका (उषा प्रियंवदा उपन्यास) की राधिका भी एक कदम आगे बढ़ीं और सुषमा की तरह अपने पिता और परिवार की परवाह किए बिना उन्होंने अपना घर छोड़ दिया। उसने जीवन पर जीत हासिल करने का फैसला किया और कुछ उतार-चढ़ाव के बाद, उसने मनीष से शादी की और एक खुशहाल वैवाहिक जीवन बिताया।

उषा प्रियंवदा के तीसरे उपन्यास शेष यात्रा में उन्होंने लेखन की एक नई शैली अपनाई है। इसे स्त्री के त्रासद जीवन का सशक्त दस्तावेज माना जा सकता है। इस उपन्यास में एक कलात्मक प्रयास है; नायिका अनु के माध्यम से एक महत्वहीन आम लड़की के संघर्ष को चित्रित करना। इस उपन्यास में उन्होंने विदेशों में रहने वाले भारतीयों के उच्च मध्यमवर्गीय समाज को उनके तमाम आंतरिक द्वंद्वों के साथ उजागर किया। पति से तलाक के बाद हीरोइन अनु जरूर टूट गई थीं। लेकिन टूटना उनके लिए जीवन शक्ति और प्रोत्साहन का स्रोत बन गया। बाद में उसने दूसरी शादी कर ली और इस तरह उसने विवाह की सदियों पुरानी संस्था को कुचल दिया।

वाना अंतर्वंशी की एक और नायिका हैं, जो प्रियंवदा की नायिकाओं - सुषमा, राधिका और अनु - में शीर्ष पर पाई जाती हैं। इन हीरोइनों में से वह सबसे बोल्ड हैं। सुषमा, राधिका और अनु साक्षर थीं और शुरू से ही बहुत जागरूक थीं, लेकिन वाना ने अपनी प्रारंभिक स्कूली शिक्षा के बाद इतना बड़ा निर्णय लिया जिसने उनके चरित्र के विकास और उनके व्यक्तित्व और अस्तित्व की स्वतंत्रता को एक नया आकार दिया।

प्रियंवदा ने अपने "भय कबीर उदास" में अपनी नायिका यमोन की निराशाओं, इच्छाओं और उदासीनता को बहुत कुशलता से चित्रित किया है। उन्होंने अपनी नायिका यामोन को बीमार होने के बावजूद भी मजबूती से रखा है।

प्रियंवदा की लघुकथाओं की दुनिया:-

उषा प्रियंवदा आधुनिकता की जानकारी रखने वाली कहानीकार हैं। उनकी समझ काफी नई है और साथ ही उनकी भाषा तुलनात्मक रूप से नियंत्रित है। उन्होंने कभी भी किसी कमजोर औरत की कहानी नहीं कही और न ही भावनात्मक सच्चाई को सच माना बल्कि उन्होंने विशेष परिस्थितियों में अकेलेपन, बेबसी, हार और निराशा से अवगत कराया। उषा प्रियंवदा की लघुकथा संग्रह- "जिंदगी और गुलाब का फूल" में; सभी कहानियाँ भारतीय नारी जीवन की छाप और अनुभवों से जुड़ी हैं।

"कितना बोरा जुथ" में संकलित कहानियों का अधिकांश भाग अमेरिकी या यूरोपीय परिवेश में लिखा गया है; और जिन कहानियों का परिवेश भारतीय है, उनमें प्राथमिक पात्र महिलाएं हैं, जिनका रिश्ता यूरोप या अमेरिका से है। इसलिए इनमें आधुनिकता की आवाज ज्यादा मजबूत है.

"सम्बन्ध" कहानी में भारतीय नारी की निराशा का चित्र है। यहां हेरोइन ने अपनी शादी के बाद वैवाहिक रिश्ते से बाहर अवैध संबंध बनाने का प्रयास किया। लेकिन नैतिक जीवन की भारतीय मानसिकता ने उन्हें आत्महत्या करने पर मजबूर कर दिया।

चादनी बर्फ पर, कितना बड़ा झूठ, विचित्रता, जले, मूर्ति आदि कहानियों की सभी नायिकाएं बेचैनी और भ्रम टूटने की स्थिति में हैं। इन सभी कहानियों में पुराने और नये मूल्यों का द्वंद्व है। तस्वीर हमेशा मानवीय रिश्तों के बनने और बिगड़ने की तस्वीर होती है।

परिवर्तन और प्रगति साथ-साथ चलते हैं। प्रगति के लिए परिवर्तन जरूरी है. हमारे समाज की प्रगति के लिए नये मूल्यों का होना जरूरी है। यह आवाज उषा प्रियंवदा की रचनाओं में प्रतिबिंबित हुई है।

सातवें दशक के बाद की महिला लेखिकाओं में उषा प्रियंवदा का स्थान काफी महत्वपूर्ण है।

"उनकी सभी कहानियों की पृष्ठभूमि में एक विचार, एक छवि, एक अहसास और एक भावना का भ्रूण अवश्य है। वही भ्रूण उसकी कहानी का विषय बन जाता है। उषा प्रियंवदा की विशिष्टता एक उपन्यासकार के विचारों को पारंपरिक गलत आदर्शों और ज्ञात कमजोरियों से मुक्त करना

और उन्हें विवेक से जोड़ना था"।

उनके उपन्यासों में कथानक बहुत सशक्त हैं और उनमें कोई कलात्मक कमी नहीं है। असामान्य जीवन की ऊब, संत्रास और चिड़चिड़े जीवन से उत्पन्न अलगाव से अपने अस्तित्व की अनुभूति और व्यक्तिगत स्वतंत्रता की तस्वीर है। जैसा कि आधुनिक साहित्य में दिखाया गया है, वर्तमान शहरी जीवन व्यक्तियों की ऊब और अलगाव के लिए जिम्मेदार है। आजकल व्यक्ति लोगों के साथ रहते हुए भी अकेलापन महसूस करता है और खुद को अव्यवस्थित महसूस करता है। व्यक्ति ने स्वतंत्रता की आशा से स्वयं को अपनी सीमा में ही सीमित रखा। अत: इन सभी घटनाओं का प्रभाव तत्कालीन साहित्य पर पड़ना स्वाभाविक है।

उषा प्रियंवदा के सभी महिला पात्र मध्यम वर्गीय परिवारों से हैं और वे सांस्कृतिक चेतना और महिला की पहचान और स्वतंत्रता के बारे में उनके विचारों को प्रतिबिंबित करते हैं। उषाजी ने इन पात्रों को अपनी धारणा के अनुरूप जीवंत बनाया। उन्होंने पात्रों के माध्यम से आज के नारीत्व की विसंगतियों, परेशानियों, संत्रास और आंतरिक संघर्षों को प्रतिबिंबित किया। पचपन खम्भे लाल दीवारें में नारी-मन की घुटन, विपत्तियों और आन्तरिक संघर्षों का सूक्ष्म चित्रांकन किया गया है। इस उपन्यास को मध्यवर्गीय समाज के विचारों की सशक्त यथार्थवादी अभिव्यक्ति माना जा सकता है।

उषाजी की नायिकाएँ आत्म-निर्भर, स्वाभिमानी, बुद्धिमान और आर्थिक क्षेत्र में अच्छी स्थिति में हैं। इन सबके बावजूद वे अकेलेपन से परेशान हैं।

उषा प्रियंवदा युग चेतना से प्रभावित हैं। उनके जीवन-दर्शन को मूर्त रूप देने में त्रिनेत्र के वातावरण और वर्तमान युग के प्रभाव तथा अनुभव ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

उन्होंने जो कुछ भी लिखा और जो कुछ भी उन्हें ज्ञात हुआ वह समाज में महिलाओं की स्थिति के अलावा और कुछ नहीं था। उन्हें समाज में महिलाओं के साथ लगातार हो रहे अन्याय और असमानता की विस्तृत जानकारी थी। उनकी राय में बचपन से ही लड़की और लड़के में फर्क किया जाता है, जिसके चलते पुरुष खुद को महिला से श्रेष्ठ समझने लगता है और महिला में हीन भावना आ जाती है।

उषा प्रियंवदा का लेखन उनके व्यक्तित्व का व्यावहारिक प्रमाण है, क्योंकि यह सत्य है कि किसी के लेखन में उसके व्यक्तित्व की झलक मिलती है। हडसन के अनुसार: "प्रत्येक महान कलाकार एक नया सार सामने लाता है; और यह सार कोई और नहीं बल्कि स्वयं ही है।''

उषाजी के लेखन की एक और विशेषता यह है कि एक महिला समसामयिक जीवन के संघर्ष के विभिन्न क्षेत्रों में अपने अधिकारों के लिए लड़ने की क्षमता रखती है। उनके लिए लेखन उनके जीवन का एक अविभाज्य हिस्सा है, जो उनके लिए अपरिहार्य भी है, 'उन्हें कुछ रचने की अपनी क्षमता पर कोई संदेह नहीं था। उनके अनुसार सृजन आसान और स्वाभाविक प्रक्रिया है'। उसने टिप्पणी की:

"सृजन का कार्य मेरे हृदय में सुचारू रूप से चल रहा है, चाहे वह मेरे लेखों या मेरे व्याख्यानों या मेरे पात्रों या यहां तक कि मेरी नोटबुक के माध्यम से व्यक्त किया गया हो"।

उनकी रचनाओं में आत्मबोध और स्वयं की खोज है। आधुनिक दृष्टि से सामाजिक स्थिति का अध्ययन करना उषा प्रियंवदा की रचनात्मकता का एक गुण है।

निष्कर्ष

'अय्यपन' आंदोलन भारत के सबसे महत्वपूर्ण आंदोलनों में से एक है, जिसमें कहानी की कथा और वर्णनात्मक रूप पर ज़ोर दिया गया है। यह सिर्फ कथा के बारे में नहीं है, बल्कि कथा के बारे में भी है, जो कथा स्वरूप, कथा स्वरूप, कथा स्वरूप और कथा स्वरूप से प्रभावित होता है। 'अय्यपन' आंदोलन कहानी के कथात्मक स्वरूप को बढ़ावा देकर आधुनिक समाज को आकार देने में सहायक रहा है। इसने कहानी के कथा स्वरूप, कथा स्वरूप और वर्णनात्मक स्वरूप को आकार दिया है। पिछले कुछ दशकों में, 'अय्यपन' आंदोलन को एक मजबूत कथात्मक रूप, एक कथात्मक रूप और एक कथात्मक रूप की विशेषता दी गई है। यह कहानी के कथात्मक स्वरूप और वर्णनात्मक स्वरूप को आकार देने में सहायक रहा है। 'अय्यपन'

आंदोलन आधुनिक समाज के विकास के लिए एक उत्प्रेरक रहा है, जो कथा स्वरूप और कथा स्वरूप में इसकी भूमिका पर एक आलोचनात्मक प्रवचन को बढ़ावा देता है। इसने कहानी के कथात्मक स्वरूप और वर्णनात्मक स्वरूप के विकास में भी योगदान दिया है। निष्कर्षतः, 'अय्यपन' आंदोलन एक शक्तिशाली शक्ति है जिसने भारतीय समाज के कथा स्वरूप और कथा स्वरूप को आकार दिया है। यह भारतीय समाज के कथा स्वरूप और कथा स्वरूप को आकार देने, कथा स्वरूप पर एक आलोचनात्मक प्रवचन को बढ़ावा देने और कथा स्वरूप को आकार देने में इसकी भूमिका में सहायक रहा है।

सम्राट लक्ष्मण की तीसरी यात्रा, सम्राट के जीवन की एक प्रतीकात्मक यात्रा है। यह सम्राट के जीवन को उसके आंतरिक देवताओं की सहायता से चित्रित करने का एक प्रतीकात्मक प्रयास है। बाद में सम्राट की पत्नी को एक बाघ ने मार डाला, लेकिन बाघ सम्राट के जीवन और अपनी पत्नी के प्रति उसके प्रेम का प्रतीक था। सम्राट की तीसरी यात्रा सम्राट के जीवन की एक प्रतीकात्मक यात्रा है। यह सम्राट के जीवन के माध्यम से एक प्रतीकात्मक यात्रा है, सम्राट के जीवन के माध्यम से एक यात्रा है, और सम्राट के जीवन के माध्यम से एक यात्रा है। यात्रा को सम्राट की मृत्यु, सम्राट की मृत्यु और सम्राट की पत्नी की मृत्यु द्वारा चिह्नित किया गया है। सम्राट की चौथी यात्रा सम्राट के जीवन की एक प्रतीकात्मक यात्रा है। यह सम्राट के जीवन के माध्यम से एक प्रतीकात्मक यात्रा है, सम्राट के जीवन के माध्यम से एक यात्रा है, और सम्राट के जीवन के माध्यम से एक यात्रा है। यात्रा को सम्राट की मृत्यु, सम्राट की मृत्यु और सम्राट की मृत्यु द्वारा चिह्नित किया गया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

(1) अविनाश महाजन: उषा प्रियंवदा की कहानियाँ मेरे टूटे जीवन मूल्यों का यथार्थ चित्र पृ-96।
(2) साहित्य मण्डल पत्रिका, अंक 165, फरवरी-मार्च, 1993।
(3) उषा प्रियंवदा: भया कबीर उदास, प्रथम पृष्ठ।
(4) डॉ. संत बखत सिंह: नई कहानी, कथ्य और शिल्प, पृष्ठ-118।
(5) डॉ. हेमराज कौशिक: मूल्य और हिन्दी उपन्यास, पृष्ठ-187।
(6) डॉ. सबिता चोखोबा कीर्ति: आठवे दशक की लेखिकायों के उपन्यास में व्यक्त स्त्री चरित्र, पृष्ठ-32
(7) हडसन: साहित्य के अध्ययन का एक परिचय, पी-15।
(8) उषा प्रियंवदा: मेरी प्रिय कहानियाँ, पृष्ठ-10।